शोध-ऋतु

Shodh-Rityu तिमाही शोध–पत्रिका

PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE-24 **VOLUME-1** IMPACT FACTOR - **SJIF-6.586,** IIFS-4.125,

ISSN-2454-6283 अप्रैल-जुन, 2021

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

सम्पादक

डॉ.सुनील जाधव ,नांदेड

9405384672

तकनीकि सम्पादक

अनिल जाधव,मुंबई

पत्राचार हेतु पता–

महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी, हनुमान गढ़ कमान के सामने, नांदेड–43160

Head of the Dept.
ACS College, Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded.

ISSUE-24 VOL-1 IMPACT- SJIF-6.586, IIFS-4.125, ISSN-2454-6283 अप्रैल-जुन,2021

अनुक्रमणिका

1.निराला और राम की शक्ति पूजा–डॉ.जयलक्ष्मी एच. पाटिल 5
2.मन्नू भण्डारी की रचनाओं में स्वातंत्र्योत्तर भारतीय नारी की समाजिक स्थिति–शाहिद हुसैन, डॉ.श्रद्धा हिरकने 7
3.उत्तर–आधुनिकता और भारतीय समाज–डॉ.सुजाता गुप्ता 10
4.कृष्णा सोबती के उपन्यासों में चित्रित नारी–डॉ. गुलाब राठोड 12
5.स्त्री विमर्श–डॉ.व्ही.सी.ठाकुर 15
6.दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार आंदोलन–वि. शेषगिरि, ... 16
7.निराला के काव्यकला की विशेषताएँ–प्रा.डॉ.पी.एम. भुमरे 18
8.आचार्य अभिनवगुप्त के द्वारा रचित ग्रन्थों का परिचय–(चन्द्र किशोर) 21
9.गाँधी दर्शन की प्रासंगिकता और वर्तमान भारत की वैश्विक चुनौतियों में (स्वच्छता)–डॉ.निशा बहल 25
10.राष्ट्रीय मूल्यों के विकास में प्रशिक्षण की भूमिका–डॉ.अखिला सिंह गौर 26
11.नागार्जुन की रचनाओं में मार्क्सवादी विचारों की झलक– रीना महतो 29
12.सन्त साहित्य : कबीर और समाज–डॉ.रामप्रवेश सिंह 32
13.हिन्दी साहित्य और आत्मकथा लेखन : एक अध्ययन–अनिल कुमार पाण्डेय 35
14.समकालीन हिंदी कहानी में चित्रित दलित उत्पीड़न–रीनू रानी 38
15.चित्रा मुद्गल की कहानी 'वाइफ स्वैपी' में पुरुष वर्चस्व का चित्रण–डॉ.राजीव कुमार 40
16.मन्नू भण्डारी के बाल साहित्य में स्त्री:पुरुष संबंध–कल्पना पंड्या 42
17.मेरा बचपन मेरे कंधों पर:दलित समाज का आईना–संजू शर्मा 44
18.स्त्री आत्मा को थपकियां देती गगन गिल की कविता–षैजू के 46
19.स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी नाट्य लेखन और स्त्री अस्मित–श्रवण कुमार 48
20.Task Analysis In Planning Teaching- Rita Shrivastava 52
21.राही मासम रज़ा के 'आधा गाँव' उपन्यास में राष्ट्रीय एकता का संदेश–डॉ. जलालखान पठाण 54
22.प्रेमचंद का साहित्य और हिन्दी सिनेमा–राजेश कुमार राजन 56
23.बाजारवाद व उदारीकरण का वर्तमान पर प्रभाव–डॉ.विकास कुमार 60
24.Gary Snyder's Concern For Nature- Hemlata Kumari 63
25.महानुभाव पंथीय स्त्रियांचा सामाजिक विकास : एक दृष्टिक्षेप–चंद्रकांत गौतम गजभारे 64
26.आहुति उपन्यास के माध्यम से अभिव्यक्त मणिपुरी समाज–रंजू शर्मा 67
27.प्रेमचन्द की कहानियों में प्रभाव और परिणाम–डॉ.महेश चन्द 69
28.रामचन्द्रिका में सत् असत् कार्य वर्णन–डॉ.प्रेम प्रकाश शर्मा 7
29.उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी का अंतर्द्वन्द्व–श्रीजा थॉमस 7
30.समकालीन कहानी में प्रतिरोधी स्वर–संतोष 7
31.इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता में स्त्री–रूपरत्न कुमारी 7
32.आधुनिक समाज और बाल साहित्य–प्रकासराव काकानी 8
33.Power Situation Of Haryana In Indian Context-Dr. Suman Mehta 8
34.बदलता भारतीय परिदृश्य और महाराष्ट्र का वारकरी सम्प्रदाय–डॉ.शंकर रामभाऊ पजई 8

Head of the Dept.
ACS College Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded.

7.निराला के काव्यकला की विशेषताएँ–प्रा.डॉ.पी.एम. भुमरे

सा. प्राध्यापक (हिंदी विभाग)
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, शंकरनगर, ता. बिलोली

भाव पक्ष निराला जी का समूचा कृतित्व उनके व्यक्तित्व के समान ही व्यापक, विराट और महान है। उनके व्यक्तित्व की समूची अन्तर्विरोधी अनुभूतियाँ एवं सम्वेदनाए कृतित्व की अन्तरात्मा के रुप में साकार हो उठी है। उनके काव्य के भावना के स्तर के विकास के ऋमिक स्वरुप को स्पष्ट करते हुए आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी ने एक स्थल पर लिखा है "निराला जी का काव्य–विकास 'परिमल–गीतिका' तक एक विशेष दिशा का निदर्शक है। उनकी राम की शक्ति–पूजा और तुलसीदास आदि बृहत्तर काव्य–रचनाएँ एक दूसरे उत्थान की प्रतिनिधि है। कुकुरमत्ता से लेकर बेला और नये पत्ते तक निराला जी का काव्य व्यंग, हास्य और प्रयोग की धाराओं में प्रवाहित हुआ है। उनका अन्तिम काव्य–निर्माण शान्त रस की भूमिका पर है। भाषा के प्रयोग में भी अनेक परिवर्तन निराला जी ने किए है, यद्यपि उनकी एक श्रृंखला भी बनी हुई है। इन समस्त भिन्नताओं के रहते हुए भी–निराला का काव्य–वैशिष्ठ्य किसी सूक्ष्मदर्शी समीक्षक द्वारा ही आकलित हो सकता है। प्रायः लोग उनकी सम्पूर्ण रचनाओं का तारतम्य नहीं जान पाते। विविधता में एकता ही पहचान नही हो पाती।"

स्पष्टतः कहा जा सकता है कि निराला जी के भावगत वैचारिकता के स्तर पर ऋमशः विकास एवं परिवर्तन हुआ है, यही उपरोक्त महोदय के कथन का अभिप्रायः है। इसी दृष्टि से भाव और विचार के स्तर पर निराला जी को समन्वयवादी के साथ–साथ ऋमशः विकासवादी भी कहा जाता है। उनके काव्य में अनेक भावों–विचारों का सुन्दर समन्वय हुआ है, इस ओर इंगित करते हुए श्री विश्वम्भर मानव कहते है– "वे एक साथ छायावादी, प्रयोगवादी, मानवतावादी और ब्रह्मवादी भी है। वे व्यक्तिवादी भी है और समष्टिवादी भी, यथार्थवादी भी है और आदर्शवादी भी, निराशावादी भी है और आनन्दवादी भी। युग की सभी प्रमुख प्रवृत्तियाँ उनके काव्य में प्रतिबिम्बित है। वे एक युग है।" वस्तुतः यह कथन अक्षरशः सत्य है। अपनी आरम्भिक रचनाओं 'परिमल' और 'गीतिका' में उनकी प्रवृत्ति छायावादी सौन्दर्य–बोध की ओर ही अधिक उन्मुख दिखाई देती है। उनकी इस प्रवृत्ति ने निश्चय ही छायावादी काव्यधारा को ओजस्वी पौरुषता का नव आयाम प्रदान किया है। इसे उनके काव्य का प्रथम आयाम माना गया है।

इसके बाद भाव–विचार के स्तर पर निराला–काव्य का दूसरा अधिक सशक्त और समर्थ आयाम आरम्भ होता है। 'राम की शक्ति–पूजा' एवं 'तुलसीदास' जैसी प्रबन्ध–सर्जनाओं के माध्यम से कवि निराला हमारे सम्मुख एक व्यापक राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक परिवेश लेकर आते है। राम की शक्ति–पूजा मे कवि ने जहाँ पराजित–अपराजित व्यक्तित्व को समाहित कर जीवन जीने, अपने विश्वासों, मूल्यों आदर्शो,स्वत्वाधिकारों की रक्षा के लिए शक्ति के स्रोतों के नव्यान्वेषण का सन्देश दिया है, वहाँ 'तुलसीदास' में उन्होंने भारत की ह्रासोन्मुख सांस्कृतिक चेतनाओं का अंकन कर उसके पुनरुत्थान का पथ प्रशस्त किया है। "कवि और कलाकार किस प्रकार सांसारिक–भौतिक बन्धनों से ऊपर उठकर, त्याग–तपस्या के मार्ग पर चलकर सांस्कृतिक उत्थान या पुनरुत्थान में सहायक हो सकेत है, महाकवि तुलसीदास की जागरुक चेतना के माध्यम से उन्होंने बडी सबलता से इस तथ्य को उजागर किया है।" इसके बाद हम 'कुकुरमुत्ता' एवं नये पत्ते जैसी रचनाओं से भावना के स्तर पर निराला जी को एक नए अन्दाज में पाते है। जन–सहानुभूतियों से आविद्द जीवन के भोगे कटु आयामों ने वहाँ कटु व्यंग्यों का रुप धारण कर लिया है। वर्तमान पूँजीवादी व् यवस्था के प्रति पूर्ण आक्रोश की अभिव्यंजना के साथ, जन–सामान्य के साथ सहज मानवीय संवेदनाएँ प्रतिपादित की है। इसके बाद की बेला और अपरा जैसी रचनाओं में निराला जी का भाव–स्वर शान्त–स्निग्धता से तरलायित होकर अपनी और अपने परिवेश की निराशा में एक प्रकार डूब–सा जाता है। उन्हें अपने जीवन के सन्ध्या :काल में कालरात्रि के स्पष्टतः दर्शन होने लगते है और अपनी अबूझ गुनगूनाहट में, प्रकृतिमय होकर वे उसके स्वागत के लिए पूर्ण तैयार भी हो जाते है। भाव या वैचारिक स्तर पर निराला जी की काव्य चेतना के मुख्य घाट यही है।

भाव और विचार के स्तर पर निराला जी की काव्य–यात्रा के मध्य कई छोट–मोठे पडाव भी देखे जा सकते है, जिनसे कवि के भाव–विचार–वैचित्र्य का स्पष्ट आभास मिल जाता है । उनकी ओर इंगित करते हुए श्री धनंजय वर्मा लिखते है "उनके व्यक्तित्व की स्वाभाविक वीर–भावना और अहंकार ऊर्जस्वी घोष 'जागो फिर एक बार' में, आस्था और विश्वास 'तुलसीदास' , एवं बादल राग की उन कविताओं में निर्बन्ध विराट व्यक्तिव, कर्मठ वेदान्ती और गृहत्यागी संन्यासी, मौलिक, स्वच्छन्द प्रवृत्ति, जीवन––संघर्षो के उत्थान के बीच कोमल और सरल, भावुक हृदय तथा चिर विप्लवी चिर विद्रोही निराला का व्यक्तित्व प्रकाशित

Head of the Dept
ACS College, Shankarnagar

हुआ है। जहाँ 'राम की शक्ति पूजा', 'तुलसीदास' और पुनः 'बादल राग', 'जागो फिर एक बार' की कविताएँ है 'वही जुही की कली' के सौन्दर्याकंन के साथ 'कुकुरमत्ता', 'नये पत्ते' जन–सहानूभूति से सिक्त कविताएँ भी इसका कारण प्रतिभा के साथ उनकी साधना भी है।" इस प्रकार स्पष्ट है कि भाव–विचार के स्तर पर वैविध्य निराला जी के काव्य की एक अविस्मरणीय विशेषता है। छायावादी काव्य–चेतना को ऊर्जस्विता प्रदान करना निराला जी का ही काम है। मानव और प्रकृति के व्यक्त रुपों में, सौन्दर्य में आध्यात्मिक छाया का स्पष्ट आभास पूर्ण मुखर यहीं हो पाया है। उनके व्यक्तित्व के समान कई बार उनके कवितव में भी यंत्रःतंत्र विवेकानन्द बोलने लगता है। ऐसी स्थिति में निराला जी का काव्य–स्वर रहस्यवादी भी हो जाता है। उनकी काव्यगत चेतना छायावादी प्रकृति के प्रांगण में जीवन के अन्तःरहस्यों का अनुसन्धान करने लगती है। परिणामतः काव्य वेदान्त की भूमिका पर रचा जाने लगता है। इस पर भी सांस्कृतिक पुनरुत्थान की भूमिका और चेतना स्पष्ट उजागर रहा करती है। सर्वत्र वे नई भूमियाँ खोज उन पर नए–नए प्रयोग करते हुए दिखाई देने लगते है।

निराला जी के विचार में साहित्य एक स्वतः सम्भूत सृष्टि है। तभी तो सृजन के क्षणों में उन्होंने व्यष्टि को न देखकर समाविष्ट को सामने रखा है। कवि को निराला जी ने भावना का गायक और संस्कृतिक का अग्रदूत स्वीकार किया है। राजनीति से कवि को बहुत ऊँचा मान, उन्होंने कवि का कर्तव्य कर्म आनन्द के स्वर में गायन और जागरण–मंत्र फूंकना स्वीकारा है। कविता के मूल में सम्वेदना का अस्तित्व स्वीकारते हुए वे कहते है :"मैंने 'मैं' शैली अपनाई, देखा एक निजी दुख भाई, दुख की छाया पडी हृदय में, झट उभड वेदना आई।"

सहज मानवीय सम्वेदना, सहृदयता आदि गुणों को कविवर निराला जी की कविता के मूल सर्जक तत्व या प्राण तत्व कहे जा सकते है। चेतना की अवचेतन क्रियाशीलता को ही काव्य–सृजन या निसरण का मूल स्वीकारते हुए वे कहते है : "तुम्ही गाती हो अपना गान, व्यर्थ मैं पाता हूं सम्मान। "भावना रंग दो तुमने प्राण, छन्द–वन्दों में निज आह्वान।"

चेतना का यही मूल स्वर उनके समूचे काव्य के विभिन्न रुपों, आयामों एवं परिपार्श्वो में मुखर ध्वनित हुआ है। उन्होंने अपने काव्य में एक ओर जहाँ 'विधवा', 'वह तोडती थी पत्थर', 'भिक्षुक,' 'दान,' और 'सरोज स्मृति' जैसी कविताएँ रच करके सहज मानवीय करुणा एवं सहानुभूतियों को रुपाकार प्रदान किया है, वही 'बन–बेला' और 'जुही की कली' जैसी मुक्त–स्वच्छंद कविताएँ रचकर उदाम यौवन से दृप्त–वीर्य छायावादी प्रकृति प्रधान श्रृंगारिकता का भी सजीव–सकार रुपाधान किया है। उनकी कविता 'विधवा' के आरम्भ का यह चित्र कितना करुण, भावाविल एवं सजीव मार्मिक है:"वह क्रूर–काल–ताण्डव की स्मृति–रेखा सी, वह टूटे तरु से छुटी लता–सी दीन, दलित भारत की विधत्रा है।

प्रकृतिपरक छायावादी परिवेश में जीवंत करुणा का सजीव उभार शायाद ही अन्यत्र कही सुलभ हो सके। इसी प्रकार 'तोडती पत्थर' कविता का अपराजिय करुणभाव भी दर्शनीय ही है। अपराजेयता का ऐसा सजीव करुण चित्र निराला जैसा कलाकार प्रस्तुत कर सकता था:"देखते देखा, मुझे तो एक बार, उस भवन की ओर देखा, छिन्न तारः, देखकर कोई नहीं, देखा मुझे उस दृष्टि से, जो मार खा रोई नही।"

अपराजेयता की ऐसी सजीव, सटीक, सचित्र और करुणाविल भावना विश्व साहित्य में शायद ही अन्यत्र कही मिले। यह न रोने वाली वही कवि की आन्तरिक दृढता की अभिव्यक्ति है कि जो पिता, मित्रो, आलोचकों,प्रकाशकों, परिस्थितियों से प्रपीडित–शोषित होकर भी रोना नही सीखी थी । निराला के काव्य में सुदृढ एवं स्पष्ट मानवतावादी स्वर स्थान–स्थान पर मुखर होता सुना जा सकता है। आरम्भसे उन्हें चिढ थी। किसी भी रुप में मानवता की अवमानना देखकर वे चौखला उठा करते थे। 'दान' नामक कविता में उन्होंने ऐसी ही आडम्बरपूर्ण मानवता के प्रति अपना आक्रोश व्यक्त किया है कि जो दान–भक्ति के नाम पर बन्दरों को तो बुला–बुला कर माल पुए खिला सकती है, पर भूखी और निरीह मानवता की ओर जिसकी दृष्टि तक नहीं उठ पाती। यह दृश्य निहार कवि की वाणी में व्यंग्य उभर आता है : "देखा भी नही उधर फिर कर, जिस ओर रहा वह भिक्षु इतरः, चिल्लाया किया दूर दानव, बोला मैं–धन्य, श्रेष्ठ मानव।" कवि की एक अन्य प्रबन्धात्मक रचना 'सरोज–स्मृति' में तो अविरल करुणा की यह अन्तःधारा कवि की समग्र अन्तःचेतना को अभिभूत कर लेती है। निराला का अडिगण् महाप्राण व्यक्तित्व जैसे खण्ड–खण्ड होकर, बूँद–बूँद वह जाना चाहता है: "दुख ही जीवन की कथा रही, क्या कहें आज, जो नहीं कहीं, कन्ये! गत कर्मो का अर्पण, कर, करता मैं तेरा तर्पण।"

यह तर्पण कवि की मनोशान्ति का भी तर्पण कर देता है। तभी तो उसके बाद से उसका काव्य करुणा की साकार कहानी बन कर क्रमशः क्रुर एवं उग्र व्यंग्य बनता हुआ अन्ततोगत्वा शोक शम मुलक शान्ति बनकर सन्ध्या के गहन तमस में कहीं

डूब–खोकर रह गया। जिस विषय, निरीह, निर्दय व्यवस्था के साथ कवि का पाला पडता आ रहा था जिसने कदमःकदम पर उन्हें तोडने का अनवरत प्रयास किया था, उसके प्रति आक्रोश जागना, उसको समाप्त करने के लिए क्रांती का आहवान करना सहज स्वाभाविक एवं मनोविज्ञान–सम्मत ही कहा जाएगा। उनकी 'बादल–राग' जैसी कुछ कविताएँ इसी पृष्ठभूमि पर आधारित है: "गरज गरज धन अन्धकार में गा अपने संगीत, जीर्ण–जीर्ण जो दीर्ण धरा पर प्राप्त करें अवसान, रहे अवशिष्ट सत्य, जो स्पष्ट।, ताल ताल से रे सदियों के जकडें हृदय–कपाट, खोल दे कर–कर कठिन प्रहार, आए अभ्यन्तर संयत चरणों से नव्य विराट, करें दर्शन, पाए आधार।"

इस प्रकार क्रांति का स्वर जहाँ मुखर है, वहाँ पूँजीवादी शोषक व्यवस्था के प्रति अनेक प्रतीकों के रुप में प्रबल आक्रोश,घृणा और कठोर व्यंग्य का भाव भी मुखर व्यंजित है: "अबे, सुन बे, गुलाब, भूल मत गर पाई खुशबू, रंगों–आब! खून चूसा खाद का तूते अशिष्ट। डाल पर इतरा रहा कैपिटलिस्ट।"इस प्रकार के व्यंग्य–भाव उनकी कविताओं में अनेकशः मिलते है, जो कवि के विक्षोभ को व्यंजित करते है। 'कुकुरमुत्ता' और 'नए पत्ते' के अतिरिक्त अन्य रचनाओं में भी इस प्रकार के प्रतीक व्यंग्यों के सबल आघात करके कवि ने शोषित पीडित मानवता के प्रति सहानुभूति व्यक्त कर उसे जन–मन में भी जगाने का सहज प्रयास किया है।

करुणा, क्रांति, व्यंग्य, आक्रोश के साथ–साथ निराला जी के काव्य में सौंदर्य, श्रृंगार, प्रेम आदि की उदात्त भावनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति भी सर्वत्र हुई है। उनकी "संध्या सुन्दरी" एवं "जुही की कली" जैसी कुछ रचनाएँ इस दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण स्वीकारी जाती है। 'जुही की कली' की आरम्भिक पंक्तियाँ प्रस्तुत है : "विजन वन वल्लरी पर, सोती थी सुहागभरी, स्नेह–स्वप्न मग्न अपल कोमल–तन तरुणी, जुही की कली।" यौवन, सौंदर्य, प्रेम की प्रथम लहर और इस पर सहजात लाज की अरुणिमा की छाया कवि की दृष्टि में सभी कुछ जैसे अत्यन्त रमणीय एवं सजीव हो उठा है–"दूत, ऋतुपति के आए।, काँप उठी विटपी, यौवन के, प्रथम कम्प मिस, मन्द पवन से, सहसा निकल लाज चितवन के, भाव सुमन छाए।"

इस प्रकार के सरस, रंगीत, सौन्दर्य और प्रेम–श्रृंगार के अनेको चित्रण कविवर निराला के काव्य में भरे पडे है कवि भाव–विहल स्नेह की याचना करता हुआ तो अनेकशः दिखाई देता ही है, 'तुम और मै' जैसी गहन–गम्भीर कविताएँ रखकर दर्शनियता की रहस्यमय गहन घाटियों में विचरण कर उस अदृश्य सत्ता के साथ तादात्म्य स्थापित करतः हुआ भी देखा जा सकता है। "तुम तुग हिमालय श्रृंग, और मैं चंचल गति सुर–सरिता, तुम विमल हृदय–उच्छवास और मैं कांत कामिनी कविता।" वेदांत और सांख्य दर्शन या आधुनिक शब्दावली में अरविंन्द–दर्शन का समन्वित स्वरुप इस प्रकार की काव्य–पंक्तियों में स्पष्टतः उजागर है।

निष्कर्ष :–इस प्रकार उपरोक्त समग्र आकलन के आधार पर कहा जा सकता है कि कविवर निराला का काव्य–शिल्प अत्यन्त उदात्त एवं समृद्ध है। उनके व्यक्तित्व के समान ही वैशिष्टयपूर्ण एवं वैभवपूर्ण है। उन्होंने अपने नव्य शिल्प–विधान के बल पर जहाँ हिंदी काव्य, विशेषतः छायावादी काव्य को छंदों के पाय उतार कर भावों के क्षितिज पर मुक्त नर्तन का परिवेश दिया, वहाँ काव्य मे नाद सौन्दर्य एवं उच्चतम भाव भूमि को भी प्रतिष्ठित किया। कविता कामिनी को नवीन श्रृंगार एवं परिवेश तो प्रदान किया ही, उसे भावों की गहनता, भाषायी प्रौढता औरबिम्बात्मकता भी प्रदान की ।

संदर्भ ग्रंथसूचि :–1)आधुनिक कवि निराला–डॉ.रघुवंश 2)हिंदी साहित्य की प्रवृतियाँ–डॉ.जयकिशन प्रसाद 3)लमारे प्रतिनिधि आधुनिक कवि–श्री विश्वंभर मानव 4)हिंदी साहित्य का इतिहास–आचार्य रामचंद्र शुक्ला 5)नयी कविता : सिध्दांत और सर्जन–डॉ.नरेंद्रदेव शर्मा

Head of the Dept.
ACS College, Shankarnagar
Tq. Biloli Dist. Nanded.